

ग्रीष्मकालीन मृग में एकीकृत कीट प्रबंधन

सफेद मक्खी

इस कीट का प्रकोप पौधे की प्रारंभिक अवस्था से ही शुरू हो जाता है जो कि फसल की हरी अवस्था तक प्रकोप करता रहता है। शिशु एवं वयस्क कीट पौधे से रस चूसते हैं। अत्याधिक गंभीर प्रकोप में पत्तियां मुड़ जाती हैं। यह मक्खी पीले मोजेक वायरस रोग के प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।



माहू

निम्फ और वयस्कों का रंग काला होता है। शुरुआत में उनकी संख्या कम होती है, लेकिन मादा सीधे बच्चों को जन्म देती है, जिसके कारण उनकी संख्या बढ़ जाती है। माहू युवा शाखाओं, पत्तियों और फलियों में चिपके हुए दिखाई देते हैं। निम्फ और वयस्क कीट युवा तनों से रस चूसते हैं जिसके परिणामस्वरूप पत्तियां पीली हो जाती हैं। पौधे की वृद्धि में रुकावट आती है। अधिक संक्रमण में पौधे के ऊपरी भाग और उसकी फली मुड़ जाती है और उत्पादन और गुणवत्ता पर प्रभाव पड़ता है। माहू के शरीर से हनीड्यू साव बाहर निकलता है जो पत्तियों की सतह पर चिपक जाता है इस पदार्थ पर काली कवक बढ़ती है जिससे पूरा पौधा काला हो जाता है। पत्तियां काली हो जाने पर प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में रुकावट आ जाती है।



हरी अर्धकुण्डलाकार इल्ली

कीट की इल्ली अवस्था फसल की पत्तियां खाकर नुकसान पहुंचाती है। जिससे पत्तियों पर छोटे-छोटे छिद्र बनते हैं तृतीय अवस्था की इल्ली के खाने से बड़े छिद्र बनते हैं। इल्लियों मोटी शिरायें छोड़कर पूर्ण पत्तियां खाती हैं। छोटी इल्ली द्वारा पत्तियों में छोटे-छोटे छेद बनाकर खाती है जबकि बड़ी इल्लियों पत्तियों पर बड़े एवं अनियमित छेद करती है। अधिक प्रकोप अवस्था में फसल की पत्तियों के केवल शिरायें बची रह जाती हैं।

तिम्बाकू की इल्ली

कीट की नवजात इल्लियों समूह में रहकर पत्तियों का पर्ण हरित खुरचकर खाती है जिससे ग्रसित पत्तियां जालीदार हो जाती हैं जो कि दूर से ही देख कर पहचानी जा सकती है। पूर्ण विकसित इल्ली पत्ती, कली एवं फली तक को नुकसान करती है।

बहार काम्बलिया कीट

नवजात इल्लियाँ अंड-मुच्छों से निकलकर एक ही पत्ती पर झुण्ड में रह कर पर्ण हरित खुरच कर खाती हैं। नवजात इल्लियाँ 5-7 दिनों तक झुण्ड में रहने के पश्चात पहले उसी पौधे पर एवं बाद में अन्य पौधों पर फैल कर पूर्ण पत्तियां खाती हैं। जिससे पत्तियाँ पूर्णतः पर्ण विहीन जालीनुमा हो जाती हैं। इल्लियाँ द्वारा खाने पर बनी जालीनुमा पत्तियों को दूर से ही देख कर पहचाना जा सकता है।

फल्ली छेदक

नवजात इल्लियाँ कली, फूल एवं फलियों को खाकर नष्ट करती हैं पर फलियों में दाने पड़ने के पश्चात इल्लियाँ फल्ली में छेद कर दाने खाकर आर्थिक रूप से हानि पहुंचाती है।



हानिकारक कीटों के एकीकृत प्रबंधन हेतु सुझाव

माहू के संक्रमण के साथ साथ, परमक्षी कीट, लेडी बर्ड बीटल भी देखी जाती है। इस बीटल के लार्वा और वयस्क (पीले पट्टियों के साथ काले रंग का) माहू को खाते हैं और माहू की संख्या को कम करते हैं। एक और परमक्षी कीट, क्राईसोपा लार्वा भी माहू को खाते हैं। ऐसे समय में कीटनाशकों के छिड़काव नहीं करने चाहिए।

- पीला विषाणु रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला दें।
- पीले चिपचिपे ट्रेप का उपयोग करें चाहे तो इन्हें घर पर भी बना सकते हैं टीन की प्लेट या चादर में पीले रंग का पेंट करके उसमें ग्रीस या सरसों का तेल लगाकर उपयोग कर सकते हैं इन्हें प्रति एकड़ 20 से 25 ट्रेप उपयोग किये जा सकते हैं।
- विभिन्न प्रकार की इल्लियों फली छेदक कीट के आकलन व प्रबंधन हेतु फेरोमोन ट्रेप 10-12 प्रति एकड़ लगाकर कीट प्रकोप का आकलन एवं उनकी संख्या कम करें। अंडे व इल्लियों को समूह को इकट्ठा कर नष्ट कर दें।
- जैविक कीटनाशक बोवेरिया बेसियाना 400 मिली/एकड़ का उपयोग करें।

- एक सोलर लाईट ट्रेप प्रति एकड़ अवश्य लगाये जिससे विभिन्न रात्रिचर कीटों को एक साथ एकत्रित कर नष्ट किया जा सके।
- 20-25/एकड़ खूटियां (3-5 फीट ऊँची) पक्षियों के बैठने हेतु फसल की शुरुआत से ही लगाये। जिन पर पक्षी बैठ कर इल्लियाँ खा सके। निरंतर फसल की निगरानी करते रहें। जब कीट की संख्या आर्थिक क्षति स्तर से ऊपर होने पर सिफारिश अनुसार ही कीटनाशक का छिड़काव करें।
- अंड परजीवी ट्राईकोग्रामा प्रजाति का (ट्राईकोकार्ड 2.5 कार्ड प्रति एकड़) का उपयोग करना चाहिए (ट्राईकोकार्ड प्राप्त करने हेतु बायो कंट्रोल लेब कृषि विज्ञान केंद्र गोविन्दनगर नर्मदापुरम में ब्रजेश कुमार नामदेव 9244182803 से संपर्क करें)
- रस चूसक कीटों के प्रबंधन हेतु जैविक कीटनाशी वर्टिसिलियम लेकैनी का छिड़काव 400 मिली. प्रति एकड़ उपयोग करें।
- रस चूसक कीटों के रासायनिक नियंत्रण हेतु कीटनाशी इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल की 50मिली मात्रा या एसिटा मिप्रिड 20% एसपी.100 ग्राम मात्रा प्रति एकड़ उपयोग कर सकते हैं।
- विभिन्न प्रकार की इल्लियों, फली छेदक कीटों के प्रबंधन हेतु रासायनिक कीटनाशी एमामेक्विन बेंजोएट 5% एसजी या फ्लुबेन्डीयमाईड 20% की 100 ग्राम मात्रा या स्पिनटोरम 11.7% एस.सी. की 160 मिली मात्रा/एकड़ का उपयोग करें।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

कृषि विज्ञान केंद्र गोविंदनगर, नर्मदापुरम
भाऊसाहब भुस्कुटे स्मृति लोक न्यास गोविंदनगर
पलिया पिपरिया, तह- बनखेड़ी, जिला - नर्मदापुरम म.प्र.
ब्रजेश कुमार नामदेव
वैज्ञानिक - पौध संरक्षण
9244182803